Name of the Subjet	**:**	**Sociology**
Title of the Paper	**:**	**Social Research: Observation** (सामाजिक अनुसंधान : अवलोकन)
Name of the Teacher	**:**	**Dr. Mihir Kumar Jha** **Associate Professor & Head,** **Department of Sociology** **V.S.J. College, Rajnagar, Madhubani**

B.A. Sociology (Hon's)

Part- 1, Paper – 4

सामाजिक अनुसंधान : अवलोकन

(Social Research: Observation)

प्रश्न – 1 : अवलोकन क्या है?

प्रश्न – 2 : अवलोकन की मुख्य विशेषताओं को स्पष्ट करें।

प्रश्न –3 : सहभागी अवलोकन और असहभागी अवलोकन पर प्रकाश डाले।

प्रश्न – 4 : अवलोकन के गुण तथा सीमा को स्पष्ट करे।

प्रश्न – 1 : अवलोकन क्या है?

गुडे एवं **हॉट** ने स्पष्ट किया है कि विज्ञान की शुरुआत अवलोकन से होती है तथा अंतिम सत्यापन के लिए भी अवलोकन पर लौटना पड़ता है। वस्तुतः आँकड़ों के एकत्रीकरण में अवलोकन का विशेष महत्त्व है। प्रामाणिक, निष्पक्ष तथा तर्कपूर्ण तथ्यों के संकलन हेतु अनुसंधान में अवलोकन का उपयोग होता है। अवलोकन पद्धति में अन्य इंद्रियों की तुलना में आँखों का अधिक उपयोग होता है। अवलोकन को परिभाषित करते हुए **सी0ए0 मोसर** ने स्पष्ट किया है कि अवलोकन पद्धति में वाणी तथा कानों के स्थान पर आँखों के द्वारा आँकडों तथा तथ्यों का संकलन किया जाता है।[1] इस प्रकार अन्य इंद्रियों की तुलना में आँखों का अवलोकन पद्धति में विशेष महत्त्व है।

---

1. "Observation implies the use of the eyes rather than that if the ears and the voice." -*C.A. Moser; Survey Methods in Social Investigation*

पी0वी0 यंग के अनुसार अवलोकन एक व्यवस्थित तथा सुविचारित अध्ययन पद्धति है। इसमें आँखों के द्वारा स्वाभाविक रूप में घटनाओं के घटित होते समय अध्ययन किया जाता है।[2] **पी0वी0 यंग** के कथन के आधार पर स्पष्ट होता है कि अवलोकन पद्धति एक व्यवस्थित पद्धति है तथा सुनिश्चिचत आधारों पर इस पद्धति का उपयोग होता है। घटनाओं के घटित होते समय घटनास्थल पर अवलोकनकर्ता का मौजूद होना अपेक्षित है। साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि स्वाभाविक रूप से घटित हो रही घटनाओं का ही अवलोकन किया जाता है।

लिफेडी गार्डनेव के अनुसार अवलोकन आँकड़े एकत्रीकरण करने की तकनीक है। इसके अंतर्गत परिचित परिवेशों की प्राकृतिक पृष्ठभूमि में मानव–व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। इसका उद्देश्य क्षेत्रीय अध्ययन से जुड़ा होता है। अवलोकित तथ्यों को सुसंपादित रूप में प्रस्तुत किया जाता है। साथ ही परिवेश एवं वातावरण का अध्ययन किया जाता है। व्यवहारों से संबंधित प्राकृतिक परिस्थितियों का भी अध्ययन किया जाता है। व्यवहार से संबंधित उत्तेजनाओं का भी अध्ययन हाता है। अवलोकित तथ्यों को व्यवस्थित रूप में संकलित एवं अंकित किया जाता है।

वस्तुतः मनुष्य विभिन्न परिवेशों तथा घटनाओं का अवलोकन करता है। उदाहरणस्वरूप, वह आगरा जाता है और ताजमहल का अवलोकन करता है। वह दिल्ली जाता है तथा दिल्ली में कुतुबमीनार का अवलोकन करता है। इसी तरह वह खजुराहो की चिचत्रकला का अवलोकन करता है। हरी–भरी वादियों को देखता है। जंगल तथा पहाड़ को देखता है। सागर की लहरों के रू–ब–रू होता है कभी वह हवाई यात्रा के क्रम में दूर बहुत दुर ऊपर से सड़कों की पतली

---

2. "Observation is a systematic and deliberate study through the eyes of the spontaneous occurrences at the time they occur." *-P.V. Young; Scientific Social Survey and Research, p.154*

रेखाओं की तरफ देखता है। समाजशास्त्रीय अनुसंधान में इस प्रकार के अवलोकन का कोई विशेष महत्त्व नहीं है। व्यक्ति आँखे खोलता है और अवलोकन करता है। यात्रा तथा पर्यटन के क्रम में अवलोकन करता है। रेल यात्रा में भागती–दौड़ती दुनिया को देखता है। परंतु इस प्रकार के अवलोकन का वैज्ञानिक पद्धति के रूप में उपयोग नहीं होता है। वस्तुतः वैज्ञानिक पद्धति के अंतर्गत अवलोकन का उपयोग व्यवस्थित तथा सुविचारित रूप में होता है। उदाहरणस्वरूप शिक्षक छात्रों के परस्पर संबंध तथा व्यवहारों पर केंद्रित एक सुनिश्चित अनुसंधान के लिए जब स्वयं अनुसंधानकर्मी अथवा उसका सहकर्मी विद्यालय परिसर में घटनाओं, व्यवहारों तथा अन्य संबंधित पक्षों का आँखों के द्वारा अध्ययन करता है तो उसे अवलोकन कहते है। यदि कोई वेश्यामी वेश्यालय जाता है तथा वेश्याओं एवं परिवेशों का अवलोकन करता है तो उसे अवलोकन पद्धति के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है। परंतु जब कोई अनुसंधानकर्मी वेश्याओं के जीवन पर केंद्रित अध्ययन के लिए वेश्यालय जाता है तथा स्वाभाविक घटनाओं तथा व्यवहारों का अवलोकन करता है तो उसे अवलोकन पद्धति कहते है। अवलोकन पद्धति कहते है। अवलोकन पद्धति के आधार पर घटनाओं के कार्य–कारण से संबंधित दृश्यखंडों का अवलोकन किया जाता है।

अवलोकन पद्धति की अवधारणाओं के संबंध में निम्नलिखित बिंदुओं का स्पष्टीकरण किया जा सकता है–

1. अवलोकन पद्धति में अन्य इंद्रियों की तुलना में आँखों का विशेष महत्त्व है। वस्तुतः इस पद्धति में आँखों के द्वारा तथ्यों का संकलन अनिवार्य है।
2. चूँकि अवलोकन पद्धति में आँखों का उपयोग होता है। अतः घटनाओं के घटित होते समय स्वयं अवलोकनकर्ता का माजूद होना अनिवार्य है।।
3. **एफ0एन0 कार्लिजर** ने स्पष्ट किया है अनुसंधान में दो या दो से अधिक चरों के बीच में मौजूद संबंध के विश्लेषण के लिए अवलोकन पद्धति के

आधार पर आँकड़ों का एकत्रीकरण किया जाता है। अतः अवलोकन से पहले अवलोकनकर्ता को यह सुनिश्चित करना होता है कि वह किन घटनाओं का अवलोकन करना चाहता है।

4. जिस प्रकार पर्यटन यात्रा से पूर्व व्यक्ति पर्यटन की रूपरेखा को स्पष्ट कर लेता है, ठीक उसी तरह अवलोकन पद्धति के उपयोग से पहले यह तय करना होता है कि हम किन घटनाओं का अवलोकन करना चाहते है। मानव व्यवहार के किन पक्षों को देखना चाहते है। अवलोकन हेतु सुनिश्चित अध्ययन क्षेत्र का परिवेश तथा वातावरण क्या है? इस प्रकार अवलोकन पद्धति एक व्यवस्थित तथा सुविचारित पद्धति है।
5. अवलोकन पद्धति के अंतर्गत प्रघटनाओं तथा मानव व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। साथ ही घटनाओं तथा व्यवहारों से संबंधित कारण और प्रभाव का अध्ययन किया जाता है।
6. उल्लेखनीय है कि आधे–अधूरे पक्षों का अवलोकन नहीं होता है। किसी घटना के महज एक पहलू के आधार पर कार्य–कारण संबंधों की व्याख्या नहीं की जाती है। अतः अवलोकन पद्धति के अंतर्गत इकाई का अध्ययन होता है। इकाई तथा इकाई के बीच के संबंधों का अध्ययन होता है। इकाई तथा इकाई का अध्ययन होता है। इकाई तथा समूह का अध्ययन होता है समूह तथा समूह का अध्ययन होता है। इकाई समूह तथा व्यवस्था का अध्ययन होता है। इस प्रकार घटना एवं व्यवहार का संपूर्ण अध्ययन होता है। उदाहरणस्वरूप, अवलोकन के बाद एक अवलोकनकर्ता सूचित करता है कि एक पेड़ है तो उसे व्यवस्थित अवलोकन नहीं कहा जाता है। उसे अवलोकन के बाद यह बताना चाहिए कि नदी के तट पर एक आम का पेड़ है तो उसे व्यवस्थित अवलोकन नहीं कहा जाता है। उसे अवलोकन के बाद यह बताना चाहिए कि नदी के तट पर एक आम का

पेड़ सार्वजनिक नहीं है। इस पर निजी व्यक्ति का स्वामित्व है। इस प्रकार अवलोकन के आधार पर संपूर्ण परिवेश तथा पृष्ठभूमि का अवलोकन होता है। एक अन्य उदाहरण के द्वारा भी इसे स्पष्ट किया जा सकता है। एक अवलोकनकर्ता दिल्ली के एक स्कूल का अवलोकन करता है तथा बताता है कि दिल्ली के वेस्ट पंजाबी बाग में एक स्कूल है। इस प्रकार के अवलोकन को अवलोकन पद्धति के अंतर्गत मान्यता नहीं दी जा सकती है। उसे यह बताना चाहिए कि स्कूल के शिक्षक, छात्र, कर्मचचारी तथा प्रधानाचार्य का व्यवहार कैसा है? उसे यह भी बताना चाहिए कि शिक्षक तथा छात्रों के बी का संबंध कैसा है? अवलोकन के आधार पर उसे यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि स्कूल का वातावरण कैसा है? स्कूल का परिवेश तथा पृष्ठभूमि क्या है? स्कूल में सहशिक्षा का प्रबंध कैसा है। अनुशासन तथा अन्य संबंधित पक्षों का विवरण भी प्रस्तुत करना चाहिए। इस प्रकार स्कूल का अवलोकन संपूर्णता में करना चाहिए।

7. **एफ0एन0 कार्लिजर** के अनुसार अवलोकन की दिशा व्यवस्थित होनी चाहिए। यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि अध्ययन विषय की चिंतन प्रक्रिया क्या है, उद्देश्य क्या है, उपकल्पना क्या है, उपकल्पना क्या है? यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि अवलोकन किन मुख्य बिंदुओं पर केंद्रित है।
8. हाल के वर्षों में अवलोकन पद्धति का विकास आधुनिक तकनीक के रूप में हो रहा है। अवलोकन के क्रम में आधुनिक तकनीक पर आधारित विडियो कैमरे का भी उपयोग होता है। कैमरे तथा टेप का उपयोग भी किया जा सकता है।

प्रश्न – 2 : अवलोकन की मुख्य विशेषताओं को स्पष्ट करें।

विवरणों तथा विश्लेषणों के आधार पर स्पष्ट होता है कि आँकड़ों के संकलन में अवलोकन का उपयोग एक महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक विधि के रूप में होता है।

अवलोकन में अन्य इंद्रियों की तुलना में आँखों का विशेष महत्त्व है। अवलोकन में अनुसंधानकर्ता अपने अध्ययन से संबंधित लोगों के व्यवहार की सीधी जाँच करते हैं। **ब्लैक** तथा **चैंपियन** ने अवलोकन की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख किया है–

1. अवलोकन के केंद्र में व्यवहार होता है। अर्थात् व्यवहार का अवलोकन किया जाता है।
2. व्यवहार के अवलोकन के आधार पर कार्य–कारण संबंधों की व्याख्या की जा सकती है। दो या दो से अधिक घटनाओं अथवा पक्षों के बीच मौजूद संबंधों का विश्लेषण किया जा सकता है। उदाहरणस्वरूप, दिल्ली अथवा अन्य नगरों के पार्क, बाजार एवं मनोरंजन स्थलों पर युवक तथा युवतियों को प्रेमालाप करते हुए देखकर अचचानक यह प्रश्न उठ सकता है कि विभिन्न उम्र के लोगों में प्यार का यह मनमोहक उन्माद आज क्यों फैल रहा है? प्रातः काल से ही आधुनिक परिधानों में सुसज्जित होकर प्रेमी तथा प्रमिका आखिर विभिन्न स्थलों पर अपने प्यार का इजहार क्यों कर रहे है? इस प्रकार के दृश्यों के अवलोकन के आधार पर अवलोकनकर्ता के मन में उत्सुकता पैदा होती है। वह विभिन्न क्षेत्रों तथा स्थलों में जाकर प्रेमालाप के दृश्यों का अवलोकन करता है। उसे ज्ञान होता है कि आज 14 फरवरी है। वेलेन्टाइन का दिन है। अतः प्रेमी तथा प्रेमिका अपने प्यार और स्नेह का आदान–प्रदान विभिन्न स्थलों पर कर रहे है। इस प्रकार व्यवहार के अवलोकन के आधार पर कार्य–कारण संबंधों की व्याख्या की जाती है तथा घटनाओं के बीच मौजूद संबंधों का विश्लेषण किया जा सकता है। **ब्लैक** तथा **चैंपियन** ने यह भी स्पष्ट किया है कि अवलोकन के आधार पर उन घटनाओं तथा कारणों का विश्लेषण भी संभव है जो सहभागियों के सामाजिक व्यवहारों के साथ जुड़े होते है। साथ ही सहभागियों के

सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारणों तथा घटनाओं का विश्लेषण भी अवलोकन के आधार पर संभव है। उदाहरणस्वरूप औसत भारतीय परिवार के अवलोकन के क्रम में यह देखने को मिलता है कि पिता अपने पुत्र की पत्नी से एक मर्यादा में रहकर व्यवहार करता है। एक स्पष्ट दूरी मौजूद रहती है। एक स्पष्ट लक्ष्मण रेखा का अनुभव किया जा सकता है। इस प्रकार परिवार में पिता तथा पुत्र की पत्नी के बीच मौजूद दूरी के अवलोकन के आधार स्पष्ट है कि अवलोकन में अवलोकनकर्ता घटनाओं तथा व्यवहारों का अवलोकन करता है। साथ ही घटनाओं का एवं व्यवहारों को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण भी इस पद्धति के आधार पर संभव है।

3. **ब्लैक** तथा **चैंपियन** ने यह भी स्पष्ट किया है कि अवलोकन के आधार पर सामाजिक यथार्थ की सूना प्राप्त होती है। उल्लेखनीय है कि अवलोकन में अन्य इंद्रियों की तुलना में मुख्यतः आँखों का उपयोग होता है। चूँकि अवलोकन में आँखों का उपयोग होता है अतः इस पद्धति के आधार पर प्रत्यक्ष सूनाओं का संकलन होता है। चूँकि इस पद्धति के आधार पर प्रत्यक्ष सूचनाओं का संकलन होता है अतः जिस व्यक्ति या घटना का अवलोकन किया जाता है उसके संदर्भ में यथार्थ ज्ञान हो जाता है। उदाहरणस्वरूप, किताबों में पढ़कर समुद्र के संबंध में एक जानकारी मिल सकती है। प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं हो सकता है। परंतु जब एक अवलोकनकर्ता अध्ययन हेतु गोवा जाता है तो उसे सहज रूप में समुद्र से संबंधित विभिन्न पक्षों का प्रत्यक्ष ज्ञान हो जाता है।
4. अवलोकन पद्धति के एक अन्य महत्त्वपूर्ण लक्षण को स्पष्ट करते हुए **ब्लैक** तथा **चैंपियन** ने स्पष्ट किया है कि तुलनात्मक अध्ययनों में तथा अवधारणात्मक विश्लेषणों में भी इस पद्धति की विशेष भूमिका है। उन्होंने

स्पष्ट किया है कि सामाजिक जीवन में आधार सामग्री का विशेष महत्त्व होता है। उदाहरणस्वरूप, परिवार, पड़ोस मित्र–समूह तथा नातेदारों के साथ मनुष्य का गहरा लगाव होता है। इसी तरफ दफ्तर, बैंक, शिक्षण संस्थान तथा अन्य औपचारिक समूहों का भी वर्तमान जटिल समाज में विशेष महत्त्व है। इसी तरह विवाह, दांपत्य जीवन निर्धनता बेरोजगारी आदि पक्षों का भी मनुष्य के जीवन में विशेष महत्त्व है। **ब्लैक** तथा **चैंपियन** ने स्पष्ट किया है कि अवलोकन के आधार पर सामाजिक जीवन की आधार सामग्री को नियमित किया जाता है और बार–बार देखी जाती है। उदाहरणस्वरूप, व्यक्ति विभिन्न वैवाहिक उत्सवों के बार–बार भाग लेता है तथा उनका अवलोकन कर सकता है। **ब्लैक** तथा **चैंपियन** के अनुसार अवलोकन पद्धति के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन भी संभव है। उदाहरणस्वरूप, जाट जाति के वैवाहिक उत्सवों के अवलोकन के आधार पर गुर्जर जाति के वैवाहिक उत्सवों के अध्ययन के क्रम में तुलनात्मक विश्लेषण संभव है।

5. आँकड़ों के संकलन में प्रमाणिकता तथा विश्वसनीयता का विशेष महत्त्व है। **प्रो0 एम0एन0 श्रीनिवास** ने भी स्पष्ट किया है कि क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान अनुसंधानकर्मी को यह भूल जाना चाहिए कि वह किस पद पर आसीन है। उसकी जाति तथा धर्म क्या है। उसको यह भी भूल जाना चाहिए कि वह किस राजनीतिक विचारधारा से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार अवलोकनकर्ता अथवा अनुसंधानकर्ता को पूर्वाग्रह रहित होकर बिना किसी पक्षपात अविा भेदभाव के तथ्यों का संकलन करना चाहिए। **ब्लैक** तथा **चैंपियन** के अनुसार अवलोकन विधि में अवलोकनकर्ता पर एक सीमा तक नियंत्रण होता है। एक अवलोकनकर्ता अपने अनुसंधान के विषय के साथ तर्कपूर्ण रूप से जुड़ा होता है। वह अवलोकन अनुसूची का उपयोग कर

सकता है। इस प्रकार अवलोकनकर्ता को नियत्रित करने का प्रयास किया जाता है। परंतु जिन व्यक्तियों और वस्तुओं का अध्ययन किया जाता है उन पर यह विधि कोई नियंत्रण नहीं रखती है। इस प्रकार इस विधि के आधार पर घटनाओं का सहज एवं स्वाभाविक रूप में अवलोकन किया जाता है।

6. यह विधि उपकल्पनाओं की केंद्रीयता से मुक्त होती है।
7. घटनाओं तथा व्यवहारों का अवलोकन मनमाने ढंग से नहीं किया जाता है। इसमें अवलोकनकर्ता के द्वारा किसी भी प्रकार की छेड़छाड़ को मान्यता नहीं दी जाती है। घटनाओं तथा व्यवहारों का अवलोकन किया जाता है। स्वतंत्रता के साथ यह विधि किसी भी छेड़छाड़ को उचित नहीं समझती है।

विश्लेषणों तथा विवरणों के आधार पर स्पष्ट होता है कि अवलोकन एक वैज्ञानिक विधि है। व्यक्ति को अवलोकन के क्रम में यह स्पष्ट करना होता है कि उसे किन घटनाओं तथा व्यवहारों का अवलोकन करना होता है। वह सीमा में बँधा होता है। घटनाओं का स्वाभाविक एवं सहज रूप में अध्ययन करता है। इस प्रकार अवलोकनकर्ता मानव व्यवहार तथा सामाजिक घटनाओं का चश्मदीद गवाह होता है।

प्रश्न –3 : सहभागी अवलोकन और असहभागी अवलोकन पर प्रकाश डाले।

सहभागी अवलोकन

सहभागी अवलोकन में अनुसंधानकर्ता जिस समूह का अध्ययन करता है, स्वयं उसका सदस्य हो जाता है अथवा सदस्य की तरह व्यवहार करता है। उल्लेखनीय है कि अवलोकन में अन्य इंद्रियों की तुलना में आँखों का अधिक उपयोग होता है। अवलोकनकर्ता घटनाओं तथा व्यवहारों का अवलोकन करता है तथा प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करता है। जटिल घटनाओं के विविध पक्षों के अध्ययन के

लिए सहभागी अवलोकन का उपयोग किया जाता है। उदाहरणस्वरूप, यदि अनुसंधानकर्ता C.B.S.E पाठ्यक्रमों पर आधारित स्कूलों का अध्ययन करना चाहता है तथा शिक्षण संस्थाओं से संबंधित अनेक पक्षों का एवं अनेक मुद्दों का अध्ययन करना चाहता है तो वह उस स्कूल में शिक्षक की नौकरी ग्रहण कर सकता है। चूँकि उसका उद्देश्य सहभागी अवलोकन से जुड़ा हुआ है अतः वह वेतन आदि के संबंध में कोई विशेष शर्त नहीं रखता है। वह अपने साथ गोपनीय कैमरों, डिजिटल मोबाइल तथा टेप आदि को भी रख सकता है एक निर्धारित अवधि तक अवलोकनकर्ता शिक्षक के रूप में प्रकट–अप्रकट सभी प्रकार के तथ्यों के संबंध में प्रत्यक्ष जानकारी हासिल करता है। संकलित तथ्यों को व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध रूप में अंकित करता है। अनेक गोपनीय तथ्यों का भी उद्घाटन होता है तथा अनेक नए सवालों से भी मुठभेड़ होती है।। यह एक रोमांचक अध्ययन यात्रा है। सहभागी अवलोकन के दौरान एक अवलोकनकर्ता तलवार की धार पर चलता है। वह चुनौतियों तथा संघर्षों से घबराता नहीं है तथा निर्लिप्त एवं निरासक्त होकर बिना किसी भेदभाव अथवा पक्षपात के दुनिया के यथार्थ को उद्घाटित करता है। इसी तरह यदि किसी ग्रामीण समूह का अध्ययन करना हो तो किसी–न–किसी रूप में उस गाँव के साथ उसको सहभाग करना पड़ता है। वह कथावाचक के रूप में गाँव के लोगों के साथ सहभाग कर सकता है। वह संत, संन्यासी अथवा ज्योतिषी के रूप में ग्रामीण जनसमूहों के साथ घुल–मिल सकता है। वह एक होम्योपैथ डॉक्टर अथवा कंपाउंडर के रूप में जन समूहों के ह्रदय को जीत सकता है। इस प्रकार सहभागी अवलोकन में अवलोकनकर्ता को अध्ययन–समूहों के साथ सहभाग करना पड़ता है। उसका सदस्य बनना पड़ता है अथवा सदस्य की तरह व्यवहार करना पड़ता है। साधारणतः अपने अध्ययन के उद्देश्यों को प्रकट कर देने से अध्ययन का निष्कर्ष हल्का हो सकता है तथा तथ्यों की प्रामाणिकता एवं विश्वसनीयता भी खतरे में पड़ सकती है। अतः

सहभागी अवलोकन की सर्वोत्तम स्थिति यही कही कही जा सकती है कि अवलोकनकर्ता अपनी क्षमता और दक्षता के आधार पर अध्ययन समूहों के साथ घूल–मिलकर प्रामाणिक एवं विश्वसनीय तथ्यों का संकलन करे। अपने उद्देश्यों को बिना प्रकट किए अध्ययन समूहों के सदस्यों के ह्रदय को जीतकर जटिल रहस्यो के उद्घाटन में कामयाब हो जाए। **जॉन मैडगे** ने अपनी प्रख्यात पुस्तक 'The Tools of social science' में उचित ही बताया कि जब अवलोकनकर्ता के ह्रदय की धड़कनें समूह के अन्य व्यक्तियों के ह्रदयों की धड़कनों से मिल जाती है। और वह बाहर से आया हुआ कोई अनजान नहीं रहता है तो यह जानना चाहिए कि उसने सहभागी अवलोकनकर्ता कहलाने का अधिकार प्राप्त कर लिया है।

सहभागी अवलोकन क्या है?–सन् 1924 में **लिंडमन** ने अपनी पुस्तक 'Social Discovery' में सहभागी अवलोकन की अवधारणा को स्पष्ट करने का प्रयास किया। उनके अनुसार अनुसूची तथा प्रश्नावली आदि के आधार पर प्रत्यक्ष तथा विश्वसनीय जानकारी प्राप्त नहीं होती है। अतः उन्होंने विश्वसनीय एवं प्रामाणिक तथ्यों के संकलन हेतु सहभागी अवलोकन की उपयोगिता की चर्चा की है।

गुडे और **हॉट** ने सहभागी अवलोकन की प्रकृति को स्पष्ट करते हुए बताया है कि अवलोकनकर्ता अपने उद्देश्यों को प्रकट नहीं करता है। उसे अध्ययन–समूह के लोग एक सदस्य के रूप में स्वीकार कर लेते है। इस प्रकार वह समूह का सदस्य हो जाता है। अपने परिचय को छिपाकर रखने में सफल रहता है। अध्ययन–समूह के सदस्य के रूप में स्वीकृत हो जाता है। गुडे एवं

हॉट के अनुसार अवलोकन की इस कार्य पद्धति को सहभागी अवलोकन कहते हैं।[3]

पी0वी0 यंग के अनुसार, ''अनियंत्रित अवलोकन का प्रयोग करने वाला सहभागी अवलोकनकर्ता साधारणतया उस समूह के जीवन में रहता है तथा भाग लेता है जिसका कि वह अध्ययन कर रहा है।''[4]

विवरणों तथा विश्लेषणों के आधार पर स्पष्ट होता है कि प्रामाणिक तथा विश्वसनीय तथ्यों के संकलन हेतु सहभागी अवलोकन का उपयोग किया जाता है। सहभागी अवलोकन का उपयोग निम्नलिखित रूपों में हो सकता है–

1. सहभागी अवलोकन में अवलोकनकर्ता अपने उद्देश्यों को प्रकट करता है। अध्ययन समूह के लोगों को यह जानकारी होती है। कि वह अवलोकनकर्ता है, यह भी जानकारी होती है कि अध्ययन का विषय तथा मुद्दा क्या है? इस प्रकार अवलोकनकर्ता एवं अध्ययन–समूह के बीच में स्पष्ट पारदर्शिता होती है। उदाहरास्वरूप जाट जाति विवाह के अध्ययन हेतु एक अवलोकनकर्ता बीकानेर के जाट परिवारों के बीच में जाता है तथा अपने उद्देश्यों को स्पष्ट करता है। वैवाहिक लगनों के समय वह विभिन्न जाट परिवारों के वैवाहिक उत्सवों में सम्मिलित होता है। अवलोकन करता है तथा आवश्यकता अनुभव होने पर तथ्यों के स्पष्टीकरण हेतु प्रश्न भी पूछता है। इस प्रकार के सहभागी अवलोकन में एक अवलोकनकर्ता अपने–आप को अवलोकन तथा अध्ययनों तक ही सीमित रखता है। अर्थात् इसमें अवलोकनकर्ता कोई क्रियाकलाप न करके केवल अवलोकन ही करता है।

---

3. "This Procedure is used when the investigator can so disguise himself as to be accepted as a member of group." *-Goode and Hatt; Methods in Social Research, p.121*
4. "The Participant observer, using non-controlled observation, generally lives or other wise shares in the life of the group which he is studying." *-P.V. Young*

2. सहभागी अवलोकन की एक स्थिति ऐसी बनती है जिसमें अवलोकनर्ता अध्ययन समूहों से संपर्क करता है। अपने उद्देश्यों को प्रकट करता है तथा अध्ययन समूह के लोगों से संबंध भी स्थापित करता है। इस प्रकार इस स्थिति में अवलोकनकर्ता अध्ययन समूहों का सहभागी भी हो जाता है एवं अध्ययन से संबंधित दृश्यखंड़ों का अवलोकन भी करता है।
3. सहभागी अवलोकन की एक महत्त्वपूर्ण विधि तलवार की धार पर चलने के बराबर है। इस स्थिति में अवलोकनकर्ता अपने उद्देश्यों को प्रकट नहीं करता है। सहज एवं स्वाभाविक रूप में अध्ययन समूहों के साथ घुल–मिल जाता है। अनेक खतरों तथा जोखिमों को उठाकर विश्वसनीय एवं प्रामाणिक तथ्यों का संकलन करता है।

उल्लेखनीय है **व्हाइट** ने फुटपाथों पर गुजरती हुई जिंदगी के यथार्थ का अध्ययन सहभागी अवलोकन के माध्यम से किया। इसी तरह **जॉन हावर्ड** ने कैदियों के जीवन, को, **रेमंड फर्थ** ने टीकोपिया लोगों का तथा **फ्रिडरिक लीप्ले** ने श्रमिक परिवारों पर औद्योगिकरण के प्रभावों का अध्ययन सहभागी अवलोकन के आधार पर प्रस्तुत किया है। चार्ल्स बूथ ने लंदन के श्रमिकों को अध्ययन सहभागी अवलोकन के आधार पर उपस्थापित किया। उन्होंने इस अध्ययन के आधार पर अपनी महत्त्वपूर्ण कृति 'The Life and Labour of the people of London' को सत्रह खंडों में प्रकाशित किया। **मैलीनॉस्की** ने ट्रोवियाण्ड द्वीप की अग्रोनाट जनजाति का तथा **नेल्स एंडरसन** ने होबी (Hobo) लोगों का सहभागी अवलोकन विधि के आधार पर अध्ययन प्रस्तुत किया है।

असहभागी अवलोकन (Non-participant observation)

असहभागी अवलोकन में घटनाओं तथा सामाजिक व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। इसमें अवलोकनकर्ता अध्ययन समूह के साथ कोई संबंध स्थापित नहीं

करता है। इस विधि में एक तटस्थ द्रष्टा की तटस्थ द्रष्टा की तरह अवलोकनकर्ता घटनाओं का निरीक्षण करता है। उदाहरणस्वरूप, असहभागी अवलोकन के आधार पर अवलोकनकर्ता चुनाव के दौरान मतदान व्यवहार का अवलोकन करता है तथा आधार सामग्री का संकलन करता है। इसी तरह नेता जी के भाषण तथा भीड़ की मानसिकता का अवलोकन करता है। एक जुलूस का अवलोकन करता है। एक हाट, बाजार का अध्ययन करता है। इस प्रकार इसमें अवलोकनकर्ता की भूमिका बहुत सीमित होती है तथा वह अपनी सीमाओं में बँधा होता है। इस प्रकार असहभागी अवलोकन के संबंध मं निम्नलिखित बिंदुओं को रेखांकित किया जा सकता है –

1. अवलोकनकर्ता एक मौन दर्शक होता है। वह एक तटस्थ द्रष्टा की तरह घटनाओं एवं व्यवहारों का अध्ययन करता है। घटनाओं के घटित होने क वक्त उसकी उपस्थिति अनिवार्य है तथा वह तथ्यों के संकलन पर अन्य इंद्रियों की तुलना में आँखों का अधिक उपयोग करता है।
2. असहभागी अवलोकन के दौरान समूह के लोगों को यह पता नहीं होता है कि कोई उनका अवलोकन कर रहा है।
3. अन्य विधियों के उपयोग के साथ भी असहभागी अवलोकन का उपयोग हो सकता है उदाहरणस्वरूप, साक्षात्कार के दौरान भी साक्षात्कारदाता के परिवेश, घर तथा अन्य संबंधित पक्षों का अवलोकन संभव है।
4. असहभागी अवलोकन में अध्ययन समूहों के साथ अवलोकनकर्ता किसी तरह की भागीदारी नहीं करता है तथा उनकी गतिविधियों में किसी तरह का हस्तक्षेप नहीं करता है।
5. असहभागी अवलोकन में अवलोकनकर्ता अध्ययन समूह के दबाव में नहीं होता है तथा स्वतंत्र होकर अपने कार्यों का संपादन करता है।

6. सहज एवं साधारण घटनाओं के अध्ययन में असहभागी अवलोकन का उपयोग अधिक होता है। जटिल घटनाओं तथा मानव–जीवन से संबंधित परत–दर छिपी सच्चाई के उद्‌घाटन में इस विधि का अधिक उपयोग नहीं है।

प्रश्न – 4 : अवलोकन के गुण तथा सीमा को स्पष्ट करे।

विश्वसनीय, प्रामाणिक तथा प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने में अवलोकन विधि का उपयोग सुनिश्चित रूप से अधिक महत्त्वपूर्ण है। **गुडे** और **हॉट** ने सच कहा था कि विज्ञान की शुरूआत अवलोकन से होती है तथा अंत में परीक्षण एवं सत्यापन के लिए भी अवलोकन पर निर्भर होना पड़ता है। न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत को एक बगीचे में बैठकर गिरते हुए सेब के फल को देखकर उपस्थापित किया। इसी तरह चुंबक रेल आदि का आविष्कार भी अवलोकन के आधार पर ही हुआ है। यह प्रत्यक्ष जानकारी तथा ज्ञान पर आधारित है। उदाहरणस्वरूप 100^0c पर पानी उबलता है। यदि कोई निष्कर्ष को चुनौती दे तो उसे प्रयोग करके 100^0c के तापमान पर उबलते हुए पानी को दिखलाया जा सकता है। इसी तरह एक नियम है कि ऑक्सीजन आग को प्रज्वलित करने में सहायक है। यदि कोई चुनौती देना चाहे तो उसे भी प्रयोग करके दिखलाया जा सकता है। जगदीशचंद्र बसु ने भी अवलोकन के आधार पर पेड़–पौधे के संबध में कतिपय नवीन तथ्यों का प्रतिपादन किया। 'मैं कहता आँखन देखी' घटनाओं का विशेष महत्त्व होता है। वस्तुतः अवलोकनकर्ता घटनाओं तथा व्यवहारों का चश्मदीद गवाह होता है।

अवलोकन की सीमाएँ

पी0वी0 यंग ने अपनी पुस्तक 'Scientific Social Surveys and Reserch' में अवलोकन पद्धति की सीमाओं को स्पष्ट करते हुए बताया है कि सभी घटनाओं का अवलोकन नहीं हो सकता है। सभी घटनाओं के घटित होते समय

अवलोकनकर्ता का मौजूद होना भी संभव नहीं है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि सभी प्रकार की घटनाओं के अवलोकन की इजाजत भी एक अवलोकनकर्ता को समाज के द्वारा स्वीकृत नियमों के अंतर्गत प्रदान नहीं की जा सकती है।

पी0वी0 यंग के कथन के आधार पर अवलोकन की सीमाओं के संबंध में निम्नलिखित तथ्यो का स्पष्टीकरण होता है–

1. पी0वी0 यंग ने स्पष्ट किया है कि सभी घटनाओं का अवलोकन सभंव नहीं है। उदाहरणस्वरूप, अतीत का अध्ययन अवलोकन के माध्यम से संभव नहीं है। हम चाहकर भी गुजरे हुए कल का अध्ययन नहीं कर सकत है। यदि एक अवलोकनकर्ता की इच्छा हो कि पाकिस्तान में घटित भूकंप की घटना को अवलोकन के आधार पर अध्ययन करें तो साधारणतः उसको सफलता नहीं मिल सकती। साधन का अभाव हो सकता है। आर्थिक स्तर पर संघर्ष करना पड़ सकता है। पाकिस्तान से वीजा प्राप्त करने में कठिनाई उत्पन्न हो सकती है। इस प्रकार विलंब होने पर घटना क्षेत्रों का माहौल बदल सकता है तथा प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने में वह असफल हो सकता है।
2. पी0वी0 यंग ने यह भी स्पष्ट किया है कि कुछ घटनाओं का अवलोकन किया जा सकता है। परंतु घटनाओं के घटित होते समय अवलोकनकर्ता का मौजूद होना संभव नहीं होता है। उदाहरणस्वरूप, एक अवलोकनकर्ता हत्या तथा अपराध का अध्ययन करना चाहता है। वह हत्या की वारदात का अवलोकन करना चाहता है परंतु यह आवश्यक नहीं है कि जिस वक्त अवलोकनकर्ता गली, नुक्कड़ या चौराहे पर खड़ा हो जाए ठीक उसी वक्त हत्या की घटना घटित हो जाए। इसी तरह यदि कोई अवलोकनकर्ता घरेलू हिंसा के तहत पति–पत्नी में मारपीट की वारदात का अवलोकन करना चाहे तो आवश्यक नहीं है कि ठीक उसी वक्त जब कोई

अवलोकनकर्ता किसी के परिवार में प्रवेश करे पति–पत्नी में हाथापाई हो जाए।

3. पी0वी0 यंग ने अवलोकन की एक अन्य सीमा की चर्चा करते हुए बताया है कि कुछ घटनाओं का हम अवलोकन कर सकते है। परंतु समाज के स्वीकृत नियमों तथा मापदंडों के अंतर्गत उन घटनाओं के अवलोकन की इजाजत नहीं दी जा सकती है। उदाहरणस्वरूप दांपत्य जीवन में पति–पत्नी के बीच शारीरिक संबंधों की स्थापना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। दांपत्य जीवन के अध्ययन के क्रम में यदि कोई अवलोकनकर्ता पति–पत्नी के शारीरिक संबंधों का अवलोकन करना चाहे तो समाज के स्वीकृत नियमों एवं मापदंडों के अंतर्गत इस प्रकार के अवलोकन की इजाजत नहीं दी जा सकती है। उपर्युक्त सीमाओं के बावजूद अवलोकन एक महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक विधि है तथा अवलोकन के बिना विश्वसनीय, प्रामाणिक एवं आर–पार अध्ययन संभव नहीं है।